IOSR Journal Of Humanities and Social Science (IOSR-JHSS)
Volume 30, Issue 8, Series 9 (August, 2025) 40-42
e-ISSN: 2279-0837, p-ISSN: 2279-0845.
www.iosrjournals.org

राधानंद सिंह की कविताओं में प्रकृति

पिंकी कुमारी
स्नातकोत्तर विभाग, हिंदी
भू. ना. मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा (बिहार)

डॉ. विनय कुमार चौधरी
स्नातकोत्तर विभाग, हिंदी
भू. ना. मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा (बिहार)

Date of Submission: 21-08-2025 Date of Acceptance: 31-08-2025

डॉ. राधानंद सिंह की प्रतिभा बहुमुखी है। वे रामचरितमानस के ख्यातिलब्ध भाष्यकार भी हैं, साहित्येतिहास लेखक भी हैं, अनुसंधानकर्त्ता भी, संत तुकाराम के विश्लेषक भी हैं और सर्वोपरि सिद्ध कवि भी। उनकी कवि प्रतिभा का जीवंत प्रमाण है उनकी काव्य-कृति- 'सोने का मृग मारता छलांग'। राधानंद सिंह की सिद्धि-प्रसिद्धि का प्रमाण है कि उनके लेखन पर कुलपति प्रो. अमरनाथ सिन्हा, डॉ. नीलिमा सिंह, केन्द्रीय मंत्री धमेन्द्र प्रधान, कल्याण पत्रिका के सम्पादक, विभिन्न शक्तिपीठों के पीठाधीश्वरों की लिखित अनुशंसा-प्रशंसा और टिप्पणीयाँ।

'सोने का मृग मारता छलांग' कविता संग्रह का प्रथम खंड परम्परा शीर्षक से है तो द्वितीय खण्ड 'प्रकृति' है। इस खण्ड की कविताएँ प्रकृति परक है जिनमें संकलित कविताओं की संख्या-16 है। सर्वविदित है कि मनुष्य का प्रकृति से सहजात संबंध सभ्यता के आरंभिक कारण से ही रहा है, भले ही आज सभ्यता विकास के दौर में और नगरीय संस्कृति के आलोक में मनुष्य का संबंध विच्छिन्न होता जा रहा है। बावजूद इसके प्रकृति से लगाव या रागात्मक संबंध आज भी टूटा नहीं है। प्रकृति से लगाव के लगभग एक दर्जन रूप होते है या हो सकते हैं, जिनमें प्रमुख हैं- आलंबन रूप में प्रकृति, उद्दीपन रूप में प्रकृति, दूती रूप में प्रकृति, देवी रूप में प्रकृति, विवरणात्मक रूप में प्रकृति, सरल रूप में प्रकृति आदि।

'राधानंद सिंह की प्रकृतिपरक कविताओं में भी इन्हीं रूप में प्रकृति चित्रित हुई है। लेकन प्रेरणा और संदेश के रूप में भी अनेकत्र वह विद्यमान है।

प्रकृतिपरक कविता की पहली कड़ी के रूप में है- 'सुधादान की प्रति'। इस कविता में पूनम के चाँद का सौन्दर्य वर्णित है। सुधादान का अभिप्राय है- चाँदनी का दान। चाँदनी धरती के अग-जग में पसरी हुई है, जो विरहिणी के ताप को भी बढ़ा रही है। कवि उसके लोकमंगलकारी स्वरूप की कामना करते हुए यह अपेक्षा व्यक्त करता है कि-

''छलका अरे ऐसा सुधा कलश
मिट जाए भू के पाप ताप
संताप पीड़ित जन के जीवन में
सुधादान कर जाओं।'' [1]

'अन्तरिक्ष की नीलिया' शीर्षक कविता में आकाश के नीलिमामय विस्तार को देखकर कवि विमुग्ध हुआ है। उसी प्रकार 'अस्तित्व का अस्तित्व' में समुद्र की बूंद की अस्मिता की तलाश है। इसको पढ़ते हुए अज्ञेय की अस्मिताबोधक काव्य पंक्तियाँ याद हो आती हैं- मछली उछली/मनो सागर का अन्तस्तल ही कांप गया हो या फिर हॉफ रही है मछली और फिर नदी के द्वीप का भी कथ्य स्मरण हो आता है। 'सौदामिनी का रास' में भी प्रकारान्तर से अस्तित्ववाद की ही झलक मिलती है। बिजली का चमकना उसी अभिप्राय को प्रकट करता है। ज्योति का साम्यवाद कविता धूप को केन्द्रित और आत्मकथात्मक शैली में लिखते है। इसमें उसके समतावादी अवदान की झांकी प्रस्तुत की गई है। 'भावों का मुक्ताछंद' में फूल को आलंबन बनाया गया है जो बिना किसी भेदभाव के अपनी सुगंध वितरित करता है। एक क्यारी में भले ही उसके रूप और रंग अनेक हों लेकिन वे सम्मिलित होकर गंध बाँटते हैं- जो मानव के संकीर्ण स्वभाव के विपरीत है। छतरी का साहस में कुकुरमुक्ता कहता है वह छोटे-छोटे जीवों को समभाव से संरक्षा प्रदान करता है। 'पुष्कर में निर्लेप शांत' में तालाब के कीचड़ की आत्मकथा है, जो गर्हित जीवन जी कर भी शतदल खिलाने जैसा उन्नत कार्य करता है। 'चक्षुश्रवा का सागर' में उस सर्प का मानव संदेश है जो समय पड़ने पर अपनी लघुता के बावजूद सागर के अहंकार को भी ध्वस्त कर सकता हूँ। जिस प्रकार वामन त्रिलोक को नापने में सक्षम होता है। 'मखमली सेज' में प्रकृति के लघु उपादान 'दूब' के बारे में कहा गया है। उसकी जिजीविता इतनी प्रबंल होती है कि हम भले ही रौंदते रहे है इसे/यह तो हमेशा लहलहाती रही है।''[2]

'पिंजर के बंधन तोड़' में कवि की आरंभिक पंक्तियाँ है-

खग/तुझे देख

मन करता है/नभ में उड़ कर गाऊँ
पिंजर के बंधन तोड़।' [3]

इसमें सांसारिक बंधन को तोड़ स्वतन्त्र में उड़ान भरने की इच्छा व्यक्त की गई है। 'मादक जीवन का पीयूष' में कोयल को आलंबन बनाते हुए उसे गाने को उत्प्रेरित करता है ताकि जीवन के पतझड़ में बसंत आ जाय-

कोयल/गाओं इस बार पुनः
जिससे पतझड़ सा यह जीवन मेरा
वसंत हो जाए।''[4]

'किसलय कंपित मृदुल गात' निराला के सखि वसंत आया' से प्रेरित प्रतीत होता है। कवि वसंत को संबोधित करते कहता है कि तुम जब भी आते हो, जीवन चेतना का नया इतिहास लिख जाते हो। अतः पुनः पुनः आकर 'हम द्विधाग्रस्त' और हम व्यथित हृदय में नयी उमंग भर जाओ। 'विराम जानती नहीं' कविता सरिता की धारा को लक्ष्य कर लिखी गई है। इस कविता में भी निराला की कविता का छायाभास है क्योंकि सरिता को युगों से पत्थर फोड़ने और पर्वत को लाँघने की बात कही गई है। वह प्रकारान्तर से गंगा भी है जो शिव के जटाजूट भी उलझती नहीं है। मानव जीवन में धारा एक अक्षय प्रेरणास्रोत है।

'संस्कृति' खण्ड की पहली कविता है- 'अक्षय करणा का गंगधार'। भारतीय संस्कृति में गंगा एक नदी मात्र और प्रकृति का एक उपादान मात्र नहीं है, वह हम हिन्दुओं के लिए माँ भी है, पाप मोचिनी भी है। भारतेन्दु एवं अन्य कवियों ने गंगा को इसी रूप में देखा और महिमागान किया है। राधानंद जी की इस कविता में गंगा करूणा की अक्षय धारा है। प्रत्यक्ष रूप से वह सगर सुअन एवं अन्य जीवों का उद्धार करने वाली चित्रित नहीं की गई है। साहित्य भी संस्कृति का एक महत्वपूर्ण अंग है क्योंकि वह संस्कृति को व्यक्त भी करती है और प्रभावित भी। 'विद्याभारती' कविता में पुस्तक का महिमा निरूपित करते हुए लिखता है-

''इसमें वेद की ऋचा है
कणाद की त्वचा है
तुलसी के राम है
वात्स्यायन के काम है''[5]

'सम्यता का अट्टट्टास' में विज्ञान के बारूदी प्रयोग का निषेध है।

'दीप की अवली रजाओं' में दीप द्वारा अन्धेरा दूर भगाने का जिक्र है। 'अंतःसलिला का सुधादान' में फल्गु नदी का महिमा गान है चूँकि कवि कर्म क्षेत्र गया रहा है अतः गया से प्रवाहित होने वाली नदी का प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है, 'करूणा की धारा' में कविता के मूल पर संकेत है- वियोगी होगा पहला कवि संकेत रूप में उल्लिखित है। कभी न होगा अंत' निराला की कविता 'कभी न होगा मेरा अंत से प्रेरित और उसी तर्ज पर आशावादी स्वर मुखरित है। कवि की एक महत्वपूर्ण कविता है- 'राष्ट्र और धृतराष्ट्र' द्वापरयुगीन महाभारत के ऐतिहासिक संदर्भ को उठाते हुए कवि कहता है-

राष्ट्र जब धृतराष्ट्र हो जाता है
तब शासन दुःशासन हो जाता है
अट्टालिका पर बैठी द्रौपदी
जब जब अट्टट्टास सत्तकरती है
तो जल थल हो जाता है
और थल जला''[6]

'व्योम झुका जिनके सम्मुख' कविता में महाप्राण निराला के व्यक्तित्व को रेखांकित किया गया है साथ ही उनकी जीवनगत त्रासदी भी-

पत्नी वियोग।
तनुजा ने छोड़े प्राण
मिला न चीनांशुक
निरानंद संपादक से लौटी कविता।''[7]

इस कविता में सरोज स्मृति कविता की भी स्पष्ट छाप है।

'क्या पंच परमेश्वर होता है'? कविता का शीर्षक प्रेमचंद की पंचपरमेश्वर से प्रभावित है और प्रश्नात्मक अंदाज में प्रस्तुत है। इस कविता में कफन, पूस की रात, बड़े घर की बेटी, गोदान, बूढ़ी काकी आदि प्रेमचंद की कहानी तथा निराला की भिक्षुक, विधवा आदि कविताओं का सम्मिलित स्वर है, जिस के जरिये कवि की प्रगतिवादी भावना व्यंजित हुई है।
स्वर्ण मंदिर के आपरेशन ब्लूस्टार की घटना से प्रेरित कविता है- 'चीखते भगवान'। वर्त्तमान की विरूप स्थिति-

'मानवता को/धर्म के तराजू पर
राजनीति के बटखरे से तोलते'

देखकर कवि मर्माहत है। देश की स्वतन्त्रता के पूर्व भी मध्यकाल में गजनी ओर मुगल के आक्रमण से देश आहत होता रहा है और आज भी दूषित राजनीति द्वारा स्वर्ण मंदिर में गोलियाँ चलाई जा रही हैं जिससे भगवान भी क्षतविक्षत है। 'कन्याकुमारी' कविता स्वामी विवेकानंद को केन्द्रित कर लिखी गई है।

'अस्तिख का संकट' में देश के विगलित वर्त्तमान पर अक्षपात किया गया है क्योंकि देश में जाति-पाति का भेद-भाव आज भी विद्यमान है-

न्यायालय के कठघरे से पूछता है
जन गण मन/ अपने भारत भाग्य विधाता से
अब मुझे भी बता दो/कि मेरी जाति क्या हैं?''[8]

'बरगद का पत्ता मुसकाया' कविता में कवि की प्रगतिशील चेतना के दर्शन होते है। इस कविता में गाँवो के देश भारत के गाँव की उत्तरोत्तर होती दुर्दशा और शहर की सम्पन्नता का उल्लेख है। यह कविता पढ़ कर भगवती चरण वर्मा की कविता भैसा गाड़ी और बूढ़ा नीम की स्मृति हो आती है। अंगिका के सिद्ध कवि की एक प्रबन्धात्मकृति 'पतझड' भी भाव साम्यता के कारण स्मृत्य है। शहरी जिन्दगी जीने को अभ्यस्त कवि जब एक दिन अपने गाँव जाता है तो सीमान्त पर अवस्थित बरगद औपचारिक मुस्कान के साथ पूछ उठता है-

उस दिन/जब मैं गाँव गया तो
बरगद का पत्ता मुसकाया
कैसे आये शहरी बाबू?''[9]

दो चार दिन में ही गाँव के तल्ख अनुभव से घबरा कर अंधेरे मुँह कवि अपने शहर भाग रहा है जिसे बरगद का पेड़ देख लेता है और रोकता टोकता है, वह बताता है कि पुराने गाँव में सामुहिक प्रेम सद्भाव के साथ लोग होली खेलते थे, लेकिन आज के गाँव बदहाली है, ईर्ष्या, द्वेष और शत्रुतापूर्ण रंजिश में खून की होली खेल रहे है। भाई चारा और प्रेम समाप्त हो गया है। आहत स्वर में बरगद कवि से कहता है।

आओं बात सुनो अब मेरी
जितने रत्न बने गाँवों में
छोड़ छोड़कर निकल गये सब...
होती रोज खून की होली
आओ मिलकर गाँव संवारे
अभी हाथ में शेष समय है
प्रेम भाव से मिलजूल गाएँ
और मनाएँ रंग की होली। उस दिन...''[10]

उपर्युक्त पंक्तियों में गाँव की बेहतरी के लिए नई पीढ़ी की प्रतिभा को प्रेरणा देने का प्रयास कर रहा है।

सन्दर्भ ग्रन्थः-

[1]. सोने का मृग मारता छलांग- राधानंद सिंह- पृ. 80
[2]. सोने का मृग मारता छलांग- राधानंद सिंह- पृ. 93
[3]. सोने का मृग मारता छलांग- राधानंद सिंह- पृ. 94
[4]. सोने का मृग मारता छलांग- राधानंद सिंह- पृ. 95
[5]. सोने का मृग मारता छलांग- राधानंद सिंह- पृ. 94
[6]. सोने का मृग मारता छलांग- राधानंद सिंह- पृ. 115
[7]. सोने का मृग मारता छलांग- राधानंद सिंह- पृ. 116
[8]. सोने का मृग मारता छलांग- राधानंद सिंह- पृ. 125
[9]. सोने का मृग मारता छलांग- राधानंद सिंह- पृ. 128
[10]. सोने का मृग मारता छलांग- राधानंद सिंह- पृ. 130